Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of History
H. D. Jain College, Ara.

Notes For- M.A. semm-I, CC-1, unit-1

Topic- इतिहास में वस्तुनिष्ठता (objectivity in History):-

विज्ञान ने मानवजाति के सामाजिक तथा आर्थिक जीवन में परिवर्तन कर शिक्षित समाज के धार्मिक एवं आंतरिक संबंधी दृष्टिकोण में क्रांतिकारी उपलब्धियों ने अर्द्ध-शताब्दी पूर्व अनेक इतिहासविदों को विचार-विमर्श के लिए बाध्य किया है। अन्य विधियों का परित्याग कर इतिहास को वैज्ञानिक विधियों का परित्याग कर इतिहास को वैज्ञानिक उपादनों से बहिष्कृत किया जाए, और उसके अध्ययन में वैज्ञानिक विधियों तथा आदर्शों का प्रयोग किया जाए, जिससे निश्चय ही इतिहास की उपयोगिता एवं महत्व में वृद्धि होगी।

इस प्रकार आधुनिक विज्ञान की आश्चर्यजनक उपलब्धियों ने इतिहासकारों को विवश कर दिया कि वे इतिहास को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने के विषय में विचार करें। 20वीं शताब्दी के इतिहासकारों के बीच इस गंभीर समस्या पर तर्क-वितर्क प्रारंभ हुआ। यूरोप के अधिकांश देशों विशेषकर जर्मनी के इतिहासकारों का ध्यान इस समस्या की ओर गया।

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के प्रो० जे० बी० ब्यूरी ने 1903 ई० में सत्रारम्भ के अवसर पर अपने अभिभाषण में कहा था कि- "इतिहास विज्ञान है, न कम और न अधिक।" इसका कारण बताते हुए उन्होंने पुनः कहा था कि जब तक इतिहास को कला स्वीकार किया जाएगा, तब तक इसमें यथार्थता तथा सूक्ष्मता का समावेश गम्भीरतापूर्वक नहीं हो सकेगा।"

→ **वस्तुनिष्ठता का स्वरूप :-** वस्तुनिष्ठता किसी भी घटना-पूर्व इतिहास का वास्तविक एवं सत्य वर्णन है। इसका इतिहास की व्याख्या में प्रमुख स्थान माना जाता है, क्योंकि वस्तुनिष्ठा के अभाव में कोई भी ऐतिहासिक घटना विश्वसनीय नहीं की जा सकती है। घटना का वस्तुनिष्ठ वर्णन अनिवार्य है।

इतिहासविद् प्रथम प्रकार के तथ्यों का आकलन करें, फिर स्वयं उसका शोध द्वारा वास्तविक अर्थ व स्वरूप ज्ञात करें, तो वे अपने तथ्यों के ऐतिहासिक वर्णन में वस्तुनिष्ठता ला सकते हैं।

वस्तुनिष्ठता से तात्पर्य :- साधारण शब्दों में इसका तात्पर्य यह है कि किसी भी घटना और विषय का उससे संबंधित तथ्यों का, जिससे इतिहास संबंधी जानकारी प्रदान की गई है, और उसका इतिहासविद् के द्वारा यथास्थिति और यथार्थपूर्ण वर्णन किया जाता है, वस्तुनिष्ठता कहलाता है। इस संबंध में विभिन्न ने अपने-अपने मत व्यक्त किए हैं।

ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता के बारे में प्रो. गैरों ने लिखा है कि,- "वस्तुनिष्ठता का अर्थ बिना व्यक्तिगत पक्षपातपूर्ण पूर्वाग्रह के ऐतिहासिक तथ्यों का प्रयोग करना है।" अर्थात् इतिहासविद् का मानना है कि जिस घटना का वर्णन तथ्यों के आधार पर किया जाए, वह वर्णन इतिहासविद् के व्यक्तिगत विचार और अनुमान रहित होना चाहिए।

इतिहास का स्वरूप प्रत्येक युग में बदलता रहता है और वह परिवर्तन ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता में बाधक हो जाता है। अतीत की घटनाओं पर प्रत्येक इतिहासविद् समान रूप से समान मत प्रकट नहीं कर पाते हैं।

इतिहासविद् अपने काल के आवश्यकतानुसार सोचता है और लिखता है, जैसे दास-प्रथा और साम्राज्यवाद इसका प्राचीन और मध्यकाल में समय की आवश्यकता माना

जाता था, किंतु आधुनिक काल के बदलते परिवेश में इसे
समाज का अभिशाप माना जाता है। इस सामाजिक वातावरण
में आई जागृति भी इतिहास-लेखन में ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता
के लिए अवरोध बन गयी है।

जनश्रुतियों अथवा किंवदन्तियों को भी प्राचीन
काल के समाज व इतिहास में एक ऐतिहासिक तथ्य स्वीकार
किया गया था, किंतु आज उन्हें अनैतिहासिक कहकर तथ्य
एवं प्रमाण भविष्य में अमान्य हो गए हैं, जैसे- सिंहासन
बत्तीसी, बेताल की कथाएँ आदि प्राचीन समय में ऐतिहासिक
सत्य मानी जाती थी, किंतु धीरे-धीरे इनका महत्व घटने
के कारण वर्तमान में इन्हें एक काल्पनिक शिक्षाप्रद कहानियाँ
माना जाता है। ऐसी परिस्थितियों में इतिहास में वस्तुनिष्ठता
लाना संभव नहीं हो पाता है।

मैडम धाम और कार्ल मार्क्स आदि
इतिहासकारों के अनुसार वर्तमान में सामाजिक आवश्यकता,
व्यक्तिगत रुचि और आर्थिक परिस्थितियों के आधार पर
ही इतिहासकार ऐतिहासिक तथ्यों का चुनाव करते हैं। ऐसी
परिस्थिति में उनसे वस्तुनिष्ठता की अपेक्षा नहीं की जा
सकती। जैसे कि इतिहासकार फारूकी ने सम्राट औरंगजेब
की हिन्दू-विरोधी नीति की प्रशंसा की है, तो सर जदुनाथ
सरकार ने नहीं की है। तथ्यों के चयन हेतु प्राप्त इस प्रकार
का अधिकार भी वस्तुनिष्ठता में बाधक होता है और इतिहास में
व्यक्तिगत भावनाओं को प्रधानता देने का तात्पर्य ऐतिहासिक
तथ्यों की उपेक्षा करना है। इससे इतिहासविद् अपनी भावनाओं
के अनुकूल इतिहास को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करने का प्रयास
करता है।

⟶

→ प्रो॰ वी॰ गार्डनर कहते हैं कि सामाजिक आवश्यकता का कोई मापदण्ड नहीं होता है। इसलिए एक ही ऐतिहासिक तथ्य की उपयोगिता तथा अनुपयोगिता विभिन्न कालों में बदलती रहती है। मानव जीवन की रुचियां तथा निहित स्वार्थ का स्वरूप भी प्रत्येक युग में बदलता रहता है। ऐसी स्थिति में उसमें समता तथा एकता की आशा करना एक बड़ी भूल है। इस प्रकार एक काल का इतिहास दूसरे काल से भिन्न होता है; क्योंकि काल के समाज की आवश्यकताएँ इतिहास विद के लेखन पर प्रभाव डालती है, जिससे इतिहास में विभिन्नता होना अवश्यम्भावी है।

नेपोलियन बोनापार्ट की साम्राज्यवादी नीति का विरोध यूरोप के विकसित होते राष्ट्रवाद ने किया था। इटली और जर्मनी का एकीकरण राष्ट्रवाद प्रबल तथा द्वितीय विश्वयुद्ध का कारण बना। अतः इटली के प्रमुख इतिहासकार क्रोचे और ब्रिटेन के प्रो॰ ई॰ एच॰ कार ने भी इतिहासलेखन में समसामयिक समाज की आवश्यकताओं के प्रभाव को प्रमुख माना है, जो ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता को ही बाधा देती है। प्रो॰ सीलर ने "Our human Truth" में ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता को एक परिकल्पना और एक जटील समस्या माना है, क्योंकि इतिहास लेखन एक अन्तर्चेतना का विजय है, जिस पर व्यक्तिगत भावनाओं का प्रभाव अवश्य पड़ता है।

इस प्रकार इतिहास के लेखन को समसामयिक समाज, संस्कृति और वातावरण प्रभावित करते है। उसकी रचना में काल की अभिव्यक्ति स्वतः ही हो जाती है, उस समाज की संस्कृति ही उसके दृष्टिकोण को निर्धारित कर उसके लेखन में उसकी सहायता करती है। ट्रेवेलियन जैसे विद्वान इतिहासकार प्रेम और सहानुभूति जैसी मानवीय प्रवृत्तियों को स्वाभाविक मानते है, क्योंकि वह अपनी तथा अपने समाज की रुचियों के संदर्भ में अतीत के कार्यों व उपलब्धियों का दर्शन करता है। इसलिए इसका प्रस्तुतीकरण विषयनिष्ठ होता है, वस्तुनिष्ठ नहीं हो सकता है।

इतिहास का स्वरूप रचनात्मक होता है, जो ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता की समस्या है। एक इतिहासविद् अतीत की सम्पूर्ण व्याख्या नहीं कर सकता। वह अतीत के किसी एक पक्ष का चयन कर उसकी व्याख्या करता है। चयन का यह अधिकार ही उसे पूर्वाग्रही बना देता है। इसीकारण से इतिहासविद् एक ही घटना का अलग-2 ढंग से वर्णन करते हैं। पूर्वाग्रह के कारण इतिहासविद् अपने मत को पुष्ट करने के लिए अधिक-से-अधिक तथ्यों को जुटाते हैं, जो ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठ के लिए बाधा हैं।

ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता में धर्म और जाति जैसे तत्व भी कठिनाई उत्पन्न करते हैं। इतिहासविद् धार्मिक तथा जातीय आग्रहों से स्वयं को मुक्त नहीं कर पाता तथा वह तथ्यों को तोड़-मरोड़ देता है। यह मतभेद हमें प्रोटेस्टेंट व कैथोलिक, अरब तथा यहूदी इतिहासविदों में स्पष्ट दिखाई देता है।

ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता में विभिन्न राजनैतिक दलों के सिद्धांत भी अड़चन पैदा करते हैं। इतिहासकार मार्क्सवाद, उदारवाद, पूँजीवाद, प्रजातंत्रवाद, राजतंत्रवाद आदि सिद्धांतों से प्रभावित होता है।

<u>ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता में सहायक तत्व</u>:- यद्यपि, वस्तुनिष्ठता इतिहास में एक जटिल प्रश्न है, किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि इतिहासका स्वरूप वस्तुनिष्ठ हो ही नहीं सकता। इतिहास संबंधी आचार और अनुशासन आदि इतिहास में वस्तुनिष्ठता को संभव बना सकते हैं।

प्रो० बटर फिल्ड के अनुसार, इतिहास में वस्तुनिष्ठता के समावेश के लिए पहले सामान्य इतिहास आदि शोधपूर्ण इतिहास के अन्तर को समझना चाहिए। →

→ सामान्य इतिहास साक्षित होता है, जिसे वह पक्षपातपूर्ण भावना से नहीं लिखता। अतः सामान्य इतिहास वस्तुनिष्ठ हो सकता है

ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता के लिए यह आवश्यक है कि उन इतिहासविदों की निंदा की जाए, जो तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर इतिहास को अपने विचारों का प्रचार-प्रसार बनाना चाहते हैं।

ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता के लिए यह आवश्यक है कि इतिहासविद् धार्मिक प्रभावों से दूर रहे, क्योंकि वह समाज का प्रतिनिधि होता है। इसलिए उसे किसी समुदाय अथवा धर्म से प्रभावित समाज के छोटे वर्ग की संकीर्णताओं में नहीं पड़ना चाहिए।

व्यक्तिगत ईर्ष्या, द्वेष वस्तुनिष्ठता का प्रथम बाधक तत्व होता है। अतीतकालीन घटनाओं का वर्णन एक इतिहासकार द्वेष, ईर्ष्या आदि दृष्टि विशेष से लिखता है। उसे सत्य मान लिया जाये तो उसका निष्कर्ष कदापि वस्तुनिष्ठता नहीं हो सकता। कार्ल मार्क्स, ए. जे. टॉयनबी व स्पेंगलर आदि विद्वानों ने व्यक्तिगत दृष्टिकोण के आधार पर इतिहास की घटनाओं की व्याख्या की है।